



**Date – 31 August 2022**

## मुफ्त की रेवड़ियाँ : भारत के लिए एक खतरा।



**मुफ्त की रेवड़ियाँ : भारत के लिए एक खतरा।  
चर्चा में क्यों?**

SC ने केंद्र सरकार को वित्त आयोग से परामर्श करने का निर्देश दिया है कि क्या सार्वजनिक धन का उपयोग करके राजनीतिक दलों द्वारा मुफ्त वितरण को विनियमित करना संभव है।

**मुफ्त की रेवड़ियाँ क्या है?**

मुफ्त की रेवड़ियों का भावार्थ मुफ्त में बांटी जाने वाली सुविधाओं जैसे मुफ्त बिजली, स्वास्थ्य देखभाल, और शिक्षा आदि से है जिसका समाज के विकास में कोई योगदान नहीं होता है। लेकिन भारतीय राजनीति में जब राजनीतिक दल मुफ्त बिजली / पानी की आपूर्ति, बेरोजगारों को मासिक भत्ता, दैनिक वेतन भोगी कर्मचारियों और महिलाओं को मुफ्त बस की सवारी के साथ-साथ लैपटॉप, स्मार्टफोन आदि जैसे गैजेट्स की पेशकश करने का वादा करते हैं तो वे वोट बैंक बनाने का प्रयास करते हैं।

**चुनावी रेवड़ियों का प्रारम्भ :**

- यह आधिकारिक तौर पर 1953 में तमिलनाडु के विधानसभा चुनाव में मद्रास राज्य के तत्कालीन मुख्यमंत्री स्वर्गीय कुमारस्वामी कामराज द्वारा शुरू किया गया था, जिन्होंने 1954 के बीच स्कूली

छात्रों के लिए मुफ्त शिक्षा और मुफ्त भोजन के रूप में मतदाताओं को रिश्तत दी थी। और इसके बाद द्रविड़ मुनेत्र कड़गम के संस्थापक सीएन अन्नादुरई ने 1954, 1963 और 1967 में निर्वाचित होने पर 1 रुपये में 4.5 किलोग्राम चावल का वादा करके रेवड़ी संस्कृति को आगे बढ़ाया।

- इसके बाद विभिन्न दलों ने, नकद हैंडआउट, जमीन के टुकड़े और यहां तक कि मातृत्व सहायता से मतदाताओं को लुभाने की कोशिश की।

### **वास्तव में इन मुफ्त रेवड़ियों के लिए कौन भुगतान कर रहा है?**

यह बहुत स्पष्ट उत्तर है कि हम, करदाता अपनी स्थिति को सुरक्षित करने के लिए भारत में पार्टियों द्वारा दी जा रही मुफ्त सुविधाओं के लिए भुगतान कर रहे हैं।

### **मुफ्तखोरी पर याचिका :**

- याचिकाकर्ता का कहना है कि अनुचित मुफ्त उपहारों के झूठे वादे स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाव के लिए चुनाव आयोग के जनादेश का उल्लंघन करते हैं।
- याचिका में सुप्रीम कोर्ट से इस संबंध में एक कानून बनाने के लिए संघ को निर्देश देने की मांग की गई थी।
- सार्वजनिक धन से निजी वस्तुओं-सेवाओं का वितरण, जो सार्वजनिक कल्याण के लिए नहीं है, सीधे अनुच्छेद 14 (विधि के समक्ष समानता का अधिकार), 162 (राज्य की कार्यकारी शक्ति), 266 (3) (भारत और राज्य की संचित निधि से व्यय) और संविधान के 282 (विवेकाधीन अनुदान) का उल्लंघन करता है।
- भारत के चुनाव आयोग, ईसीआई ने इस संदर्भ में चुनाव चिह्नों के आरक्षण और आवंटन आदेश 1968 का एक अतिरिक्त कानून या आदेश जोड़ा जो एक राज्य पार्टी के रूप में मान्यता के लिए शर्तों (एक "राजनीतिक दल वादा नहीं करेगा" / चुनाव से पहले सार्वजनिक निधि से तर्कहीन मुफ्त उपहार वितरित नहीं करेगा") से संबंधित है।

### **चुनावी रेवड़ियों के विषय में सर्वोच्च न्यायालय**

- हाल ही में हुई सुप्रीम कोर्ट की बैठक में सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि यह मुफ्त रेवड़ी बांटने का प्रक्रम पहली बार नहीं है।
- 2013 में सुप्रीम कोर्ट ने फिर से कहा कि चुनावी बजट से अधिक मुफ्तखोरी का बजट है जिससे "स्वतंत्र व निष्पक्ष चुनावों को बुरी तरह से प्रभावित करेगा।"
- उस वक्त सुप्रीम कोर्ट ने भी कहा था कि इस मुद्दे पर अलग से कानून बनाया जाना चाहिए।

### **मुफ्त की रेवड़ियों की चुनाव प्रचार में क्यों आवश्यकता है?**

- **सुगम विकास:** भारत में जहां राज्यों में विकास का एक निश्चित स्तर है, चुनावों के समय लोगों की ओर से पार्टियों पर कुछ उम्मीदें होती हैं जैसे सार्वजनिक वितरण प्रणाली, रोजगार गारंटी योजनाएं, शिक्षा के लिए समर्थन और स्वास्थ्य के लिए बढ़ाया परिव्यय विशेष रूप से महामारी के दौरान कुछ व्यय परिव्यय के समग्र लाभ होते हैं। जो कई बार चुनाव के समय मुफ्तखोरी से प्राप्त होते हैं।
- **गरीब राज्यों की मदद करता है:** गरीबी रेखा के नीचे आबादी के एक बड़े हिस्से के साथ तुलनात्मक रूप से, सीमांत स्तर के विकास वाले राज्यों में, इस तरह की मुफ्त सुविधाएं जरूरत/मांग-आधारित हो जाती हैं और लोगों को इस तरह की सब्सिडी की पेशकश करना उनके विकास के लिए आवश्यक हो जाता है।

## मुफ्त की रेवड़ियों का मुद्दा क्या है?

### • आर्थिक भार

1. राज्य के संसाधनों पर भारी निकासी: महाराष्ट्र में कृषि ऋण माफी के परिणामस्वरूप वित्तीय वर्ष 2020-21 के दौरान 45,000-51,000 करोड़ रुपये का व्यय हुआ।
2. विशिष्ट परिणाम लक्ष्यों का अभाव: तेलंगाना ने राजस्व प्राप्तियों का 35%, राज्य के अपने कर राजस्व का लगभग 63%, लोकलुभावन योजनाओं को वित्तपोषित करने के लिए प्रतिबद्ध किया है, जो मुफ्त में उपलब्ध हैं और इस खर्च किए गए धन की कोई जिम्मेदारी नहीं है।
3. राजस्व पक्ष:
  1. राज्य के स्वामित्व वाले उद्यमों पर नकारात्मक प्रभाव: घाटे में चल रहे सार्वजनिक उपक्रमों में अग्रणी
  2. ICRA की मार्च रिपोर्ट, 2021-22 में अखिल भारतीय स्तर पर डिस्कॉम राजस्व का 16% सरकारों द्वारा सब्सिडी भुगतान में शामिल होने का अनुमान लगाया गया था।
  3. कम कर संग्रह: मुफ्त बिजली, मुफ्त पानी, मुफ्त सवारी आदि के कारण कर की वसूली नहीं होती है।
    - स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाव विरोधी प्रथा: चुनाव से पहले सार्वजनिक धन से अनुचित मुफ्त आबंटन का वादा मतदाताओं को अनुचित रूप से प्रभावित करता है और चुनाव प्रक्रिया की निष्पक्ष प्रक्रिया को खराब करता है। यह एक अनैतिक प्रथा है जो भ्रष्टाचार को बढ़ावा और राजनीतिक एजेंडे के पतन का कारण बन सकती है। यह बिना किसी वास्तविक परिणाम के तुच्छ वादों पर सार्वजनिक संसाधनों की बर्बादी का कारण बन सकती है।
    - समानता के खिलाफ सिद्धांत: चुनाव से पहले करदाताओं के धन से, गैर-सार्वजनिक वस्तुओं और सेवाओं का वितरण (जो सामान्यतः निजी उद्देश्यों के लिए है) संविधान के कई नियमों का उल्लंघन करता है, जिसमें अनुच्छेद 14 (विधि के समक्ष समानता) शामिल है।
    - अप्रत्यक्ष रूप से पर्यावरण विरोधी : जो मुफ्त बिजली देने के बारे में हैं, तो इससे प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक उपयोग होगा और अक्षय ऊर्जा प्रणालियों पर ध्यान भी विचलित हो जाएगा।

### मुफ्त रेवड़ी आबंटन प्रथा के नकारात्मक प्रभावों को कम करने के लिए उठाए जाने वाले कदम-

चुनाव आयोग को मजबूत बनाना: मुफ्त उपहारों को एमसीसी के तहत लाना और चुनाव आयोग द्वारा घोषणापत्र को विनियमित करना।

मांग-आधारित मुफ्त: अधिक समृद्धि के लिए डीपीएसपी आधारित या जरूरतमंद सुविधा जैसे पीडीएस प्रणाली, शिक्षा, स्वास्थ्य आदि को प्राथमिकता देना

पारदर्शिता में सुधार: यह सुनिश्चित करना कि यह वास्तविक लाभार्थियों तक पहुंचे। उदाहरण के लिए, कृषि ऋण माफी केवल जरूरतमंद किसानों तक पहुंचे।

एफआरबीएम अधिनियम में संशोधन: कर्ज माफी, मुफ्त बिजली और पानी पर खर्च की सीमा तय करना।

आउटकम-बेस्ड बजटिंग: विभागों को उनके काम के लिए जवाबदेह बनाता है, जैसा कि झारखंड में हाल ही में कर्ज पर जिम्मेदारी तय की गई है।

सब्सिडी और मुफ्तखोरी में अंतर: आर्थिक अर्थों से मुफ्तखोरी के प्रभावों को समझने और इसे करदाता के पैसे से जोड़ने की जरूरत है। सब्सिडी और मुफ्त में अंतर करना भी आवश्यक है क्योंकि सब्सिडी उचित और विशेष रूप से लक्षित लाभ हैं जो मांगों से उत्पन्न होते हैं।

जनता को शिक्षित करना: ऐसे मुफ्त उपहारों के प्रभाव में राजकोषीय अनुशासन की आवश्यकता होती है। उदाहरण के लिए, नागरिक समूहों के माध्यम से ऐसे मुफ्त उपहारों के लिए धन के स्रोत की मांग करना।

गुंजन जोशी

## मंडल चित्रकला

### चर्चा में क्यों?

हाल ही में, यूनाइटेड किंगडम में लिवरपूल के एक सार्वजनिक पार्क में एक शानदार 'मंडल' कला का अनावरण किया गया, जो एक फुटबॉल मैदान के आकार से भी बड़ी है।



### मंडल

- मंडल का शाब्दिक अर्थ संस्कृत में "सर्कल" या "केंद्र" है।
- मंडल हिंदू और बौद्ध तांत्रिकों में पवित्र संस्कारों के प्रदर्शन के लिए और ध्यान के एक साधन के रूप में एक प्रतीकात्मक डिजाइन है।
- मंडल विन्यास सदियों पुराने रूपांकन हैं, जिनका उपयोग ब्रह्मांड को चित्रित करने के लिए किया जाता है।
- मंडल विन्यास एक अंतरसंयोजित ज्यामितीय विन्यास है जो आमतौर पर किसी न किसी रूप में गोलाकार आकार को शामिल करता है। यह अंतरसंयोजित वर्ग फॉर्म में भी हो सकता है।
- सिल्क रोड के साथ यात्रा करने वाले बौद्ध मिशनरियों ने इसे भारत के बाहर के क्षेत्रों में ले लिया है। इसलिए, यह बौद्ध धर्म के चित्रों में दिखाई देता है।
- छठी शताब्दी तक, चीन, कोरिया, जापान, इंडोनेशिया और तिब्बत में मंडल दर्ज किए गए थे।
- माना जाता है कि मूल अमेरिकी लोगों ने मंडल को एक देवता या ब्रह्मांड के प्रतिनिधित्व के रूप में और आध्यात्मिक रूप के रूप में इस्तेमाल किया है।

- आधुनिक भारतीय कला में मंडला के उपयोग के अलावा, इसका उपयोग चिकित्सा में किया जाता है।

### **मंडल कला की उत्पत्ति**

- मंडल शब्द सर्वप्रथम वेदों ( 1500-500 ईसा पूर्व) में दिखाई देता है, ऋग्वेद के सभी मंत्रों को दस भागों में वर्गीकृत किया गया है जिन्हें मंडल कहा जाता है। वैदिक काल से मंत्रों को छंदोबद्ध तरीके से उच्चारित करने की परंपरा थी जो मंडल के चक्रीय गुण को इंगित करता है।
- मंडला निर्माण प्रक्रिया: एक मंडला आमतौर पर रंगीन रेत की सावधानीपूर्वक विन्यास के साथ बनाया जाता है, और तदनुसार तिब्बती में इसे डल-त्सोन-क्यिल-खोर, या रंगीन रेत या पाउडर के मंडला के रूप में जाना जाता है।

### **मंडल कला, प्रतिकात्मक रूप में**

- मंडल ब्रह्मांड का प्रतिनिधित्व करती है, यह एक पवित्र क्षेत्र जो देवताओं के लिए एक पात्र के रूप में और सार्वभौमिक बलों के लिए एक संग्रह बिंदु के रूप में कार्य करता है। पुरुष (सूक्ष्म जगत), मानसिक रूप से मंडल में 'प्रवेश' करके और उसके केंद्र की ओर 'आगे बढ़ते हुए', सादृश्य द्वारा विघटन और पुनः एकीकरण की ब्रह्मांडीय प्रक्रियाओं के माध्यम से निर्देशित होता है।
- ऐसा माना जाता है कि मंडल में प्रवेश करने और उसके केंद्र की ओर बढ़ने पर, ब्रह्मांड को बदलने और दुख की भावनाओं से आनंद की भावना की ओर बढ़ने की एक ब्रह्मांडीय प्रक्रिया का अनुभव होता है।
- हिंदू दार्शनिक प्रणालियों में, एक मंडल या यंत्र आमतौर पर एक वर्ग के आकार में होता है जिसके केंद्र में एक चक्र होता है।
- एक पारंपरिक बौद्ध मंडल एक गोलाकार पेंटिंग है जो इसके निर्माता को स्वयं की खोज करने में मदद करता है।

### **विभिन्न तत्वों का मंडल में समाहित होने का क्या अर्थ है?**

- चक्र की आठ तीलियाँ (धर्मचक्र) बौद्ध धर्म के अष्टांगिक मार्ग का प्रतिनिधित्व करती हैं जो जन्म और मृत्यु के चक्र से मुक्ति दिलाती है।
- कमल का फूल संतुलन दर्शाता है।
- सूर्य ब्रह्माण्ड को दर्शाता है।
- ऊपर की ओर के त्रिभुज क्रिया और ऊर्जा का प्रतिनिधित्व करते हैं, और नीचे की ओर के त्रिभुज रचनात्मकता और ज्ञान का प्रतिनिधित्व करते हैं।

**गुंजन जोशी**